FATWA

HINDI

शुरु करता हुँ नाम से अल्लाह के जो बहुत दयालु, बहुत कृपालु है।

इस्लामी जिहाद और आतंकवाद मे जमीन आस्मान का अंतर है। इस्लाम में अल्लाह की राह मे जिहाद,, अल्लाह के पथपर संघर्ष का वह अंतिम पडाव है, जिस मे मुजाहिद (संघर्ष कर्ता) इस महान और पवित्र लक्ष्य की प्राप्ती के लिए अपने प्राणों तक की भेट प्रस्तुत करने के लिए आगे बढता है, ताकी मानवों को मानवों के दासत्व (गुलामी) से निकालकर मानव स्वतंत्रता की पुर्नस्थापना की जाये और मानवो को चिंतन, मनन और बोलने की स्वतंत्रता के वह समस्त अधिकार मिल सके जो जग के पालन हार ने अपनी असीम कृपा और विशेष अनुकम्पा से मानव को प्रदान किये है। इस्लाम मे जिहाद स्थायी शांती और सुरक्षा की स्थापना के लिए एक सुधार का हथियार है । इसकी तुलना मे आतंकवाद मानवों को भयभीत करने और आतंक का माहौल पैदा करके उनके जीने और चलने फिरने तक की स्वतंत्रता छीन लेने का नाम है।

अर्थात

जिहाद इंसानो को उनका अधिकार देता है और आतंकवाद उससे यह अधिकार छीनता है । इस्लाम मे हर इंसानी जान मुल्यवान है और एक इंसान की अकारण हत्या सारी मानवता की हत्या है आतंकवादी निर्दोष और बेगुनाह इंसानों के जीवन से खेलता है । इस्लाम ही क्या किसी भी सभ्य समाज मे यह नि:संदेह एक घिनौना और घृणा योग्य अपराध है।

इस्लाम ने युध्द तक मे आचार और धर्म का दामन छोडने की अनुमति नही दी है। (जबकी कहा जाता है की युध्द और प्रेम में सब जायज है)। इस्लाम मे युध्द के सिध्दांत और आचार संहिता बनाकर संसार को बताया कि युध्द एक ऐसा ऑप्रेशन (शरीर की चिरफाड) है जो कुछ परिस्थितियों मे अनिवार्य हो जाता है , परंतु युध्द मे पुजा स्थलों को निशाना न बनाया जायें, बस्तियों, अस्पतालों को निशाना न बनाया जायें। खेतियां न उजाडी जायें, वृक्ष न काटे जायें, वायु और जल में विष न घोला जायें।

इस्लाम मानवीय समता के आधार पर न्यायपूर्ण समाज बनाता है ताकि आतंकवाद के श्रोतों को बंद किया जा सके। संसार के समस्त दयालु इंसानो की जिम्मेदारी है की वे न्यायपूर्ण समाज की स्थापना कर मानवता को आतंकवाद के अभिशाप से छुटकारा दिलाने के लिए आगे बढे।

(मुफ्ती) फुज़ैलुर रहेमान हिलाल उस्मानी, दारुल उलूम देवबंद,- प्रधान मुफ्ती पंजाब
ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के निर्मित सदस्य एवं कार्यकारिणी सदस्य

२५, जुलै २००६ - इस्लामी मर्कज मालेर कोटला (पंजाब)